National Conference on the topic of "Technological Developments and Changing Dimensions of Law April 13-14, 2019

Conference on Technological Developments & Changing Dimensions of Law

By OUR STAFF REPORTER DEHRADUN, 13 Apr: The ICFAI University is organizing a National Conference on the topic of Technological Developments and Changing Dimensions of Law on 13th & 14th April. The Conference aims at having a healthy intellectual discussion on topics pertaining to the agenda of the Conference.

Addressing the conference on the first day, the Chief Guest for the Inaugural Session, Justice L. Nageswara Rao, a sitting Judge of the Supreme Court of India said, "Whether it is the technological development in the investigative methods or in the field of technical and record keeping work, technology is having a vast impact on our dynamic justice system. Students should take interest in understanding how technology improves the efficiency of their work and performance in court. The judiciary is focusing upon creating paperless courts and facilities like e-filing which is now being introduced in many courts for the citizens. Brain mapping and narco analysis are also used



for investigation and the results are always corroborated with the story and circumstantial evidence for judgment. On one hand, mobile phone records and information in the computers of the accused are used in courts for cross questioning and on the

other use of mobile phones have also caused major concerns for protection of privacy of individuals. Therefore knowing the law is not enough for the students of law, the use of technology for improving knowledge and the knowledge of technological developments itself is important for helping the society."

The Chief Guest of the Valedictory session is Justice Siddhartha Verma, a sitting judge in the High Court of Judicature at Allahabad.

The Guest of Honour of the session was Padmashree Dr. Anil Joshi, the founder of Himalayan Environmental Studies and Conservation Organization.

The guest of honor & key note Speaker was Prof. RK Murali, Faculty of Law, BHU, Verannel

Other guests of honor were Prof. Priti Saxena from School for Legal Studies, BBAU Central University, Lucknow and Dr. Yogesh P. Singh from National Law University, Cuttack, Odisha.

Garhwal Post

प्रौद्योगिकी न्याय प्रणाली पर प्रभाव डाल रही: राव

कार्यक्रम

आईसीएफएआई विवि
में सेभिनार आयोजित

प्रभात बारो

विकासनगर। आईसीएफएआई विश्व विद्यालय में सकतीकी विकास व कानून के बदलने आयाम पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमोनार आयीकार को गई। सेमोनार में मुख्य अतिथि भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधील एत नागेश्वर राज ने कहा कि लांच के सरीकों में तकतीकि विकास हो या रिकार्ड रखने के काम के क्षेत्र में हो प्रीयोगिकी हमारे गाँवल्ल न्याय प्रणाली पर न्यापक प्रभाव द्याल रही है। न्याय पालिका पंपरलेश कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित

कर रही है और चगरिकों के लिए कई अदालतो में अब ई-फाइलिंग जैसी मुविधार्थे शुरू की जा रही है।आईसीएफएआई विश्वविद्यालय मे दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का मुख्य अतिथि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश नागेश्वर राव ने दौंप प्रज्वतिस कर उद्घाटन किया। पूर्व न्यायाधीश राथ ने कहा कि सात्रों को यह समझने में रुचि लेनी चाहिए कि प्रौद्योगिक्यी कैसे अदालत में उनके काम और प्रदर्शन की दक्षता में सुधार करती है। कहा कि विभिन्न मामलों में जांच के लिए ब्रेन मैपिंग और नाकों एनालिसिस का भी उपयोग किया जाता है। एक तरफ मोबाइल फोन रिकॉर्ड और अधियुक्तों के कंप्यूटर में जानकारी का उपयोग पृख्यास के लिए अदालतों में किया जाता है। वहीं मोबाइल फोन के दूसरे उपयोग पर भी



दीय प्रजावलित कर कार्यक्रम का गुभारभ करते अतिथि।

व्यक्तियों को गोपनीयता की सुरक्षा के लिए प्रमुख चिलाए है। इस्तेलए कानून को जानना कानून के छात्रों के लिए पर्याप्त नहीं है बल्कि शन में मुधार के लिए प्रदेशीय की का उपयोग और तकनीकी विकास का जान हो समाज की सदद के लिए महत्वपूर्ण है। इस सौके पर पेस्ट ऑफ ऑनर एड की-

नोट स्वीकर के रूप में प्रोठ आरके मुरली फैकल्टी ऑफ ली बीएवपू बाराजमी उपस्थित थे। अन्य अतिथियों के रूप में स्कूल फॉर स्टीमल स्टडीन बीबीएमू केडीय विश्वविद्यालय लक्ष्मक से प्रो प्रीति सकसेना, प्रो. डॉ. सब्देश बहुगुण, प्रधानावार्य ला कॉलेज देहरादून, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी कटक ओडिशा के दाँ योगेश यो जिल शामिल हुए। प्री. डॉ. पदन के अग्रवाल, कुलपति आईमीएकएआई विश्वविद्यालय देहरादून, प्रमुख सरकक बाइस चांसलर प्रो.चं. पृष्ट विनय, प्रो.खं. युगल किशोर, मीनिका खारोल, निदेशक, डॉ. सागर के वायसवाल, अविषेक गर, रुदेश बीयास्तव, अकित राज, सीरभ तेखर, करन उपाध्याय, मुस्कान अग्रवाल, अपूर्व सिन्हा, जानवी पाण्डं, आयुर्व श्रीचास्तव, सीरम राजपूत आईसीएफएआई विश्वविद्यालय के अन्य कात्र स्थामिल रहे। अलीगह मुस्लिम विश्वविद्यालय, इलाहब्द अधानक विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय विधि विधि नलगम विश्वविद्यालय महित रीकड़ें प्रक्रियांगियों ने हिस्सा लिया।

तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल. नागेश्वर राव ने किया सम्मेलन का उदघाटन

उत्तर उत्तरना स्थ्री इस्पट्टा अर्थनीयस्थ्याची विश्वविद्यास्थ्री उत्तरीको विकास और कार्यु के बार्युः स्थ्री विश्वव पर से विश्वविद्यास्थ्रीय

क्षांत्रम् का युक्तारा किया जाता प्राचीना का अपनीका करण के यह ते देश तक किया जाता मार्गाव्य ज्यानात के कारण किया जाता मार्गाव्य ज्यानात के कारणीत अपनीका पात ने करण पुरस् के का जानमूर्ति एक जातावा एक ने करण के का जानमूर्ति एक जातावा एक ने करण के 'यह कर कर्म की शरीकों ने उक्तांका है कारण की मार्गाव्य के अपनीका क्षांत्रमा के ती किया कि प्राचीनात के तो अपनीका करण कारण की पह समझने में इस्त लेखा है। हेर प्रदर्शन की दक्षाण में सुधार करते. कुंचांसकर कंपासंख कार्ट क्या पर ज्यापूर्वतिका रेपानंत्र करें/ वर्ण गा कर्मात्र का दी है जेर लागिकों क हु को आरावर्ण में जब है नगरिने देशों क्षेत्र सुक्त को देशों है। ताथ के लिए क्षेत्र को एको दुन्तिगीका का गो क्षात्र किया लाग है और गरिन्स करेंगा क्षात्र किया लाग है और गरिन्स करेंगा क्षात्र किया स्थाप के लिए गरिकारि के साम मानव के साम क्षित्र करें हैं। एक



में मुंबराज कोर रिकार्ड और अभिन्यूकों अभूदर में बरुबरोग का प्रवास पुनिया के लिए अध्यक्त में विश्व जाता है और मोबदाल कोर में पूर्वर उपयोग का भी विद्यालय के आज और शासिल

लिलाय को प्रान्धाना को सुमक्ष के लिए प्रमुख रिकार है। इसिया कारण को लाला, बायर के उर्ज के लिए प्रमुख्य प्राप्त को लाला, बायर के उर्ज के लिए प्रमुख्य प्रमुख्य के प्रमुख्य के लिए प्रमुख्य के प्रमुख्य की अपने के लिए प्रमुख्य हैं। अपने के पान के लिए प्रमुख्य होंगे, प्रमुख्य के लाग के प्रमुख्य प्रमुख्य के प्रमुख्य की का में के आपने प्रमुख्य के प्रमुख्य का प्रमुख्य कार्याना उर्जावाना उर्जावाना का प्रमुख्य कार्याना उर्जावाना उर्जावाना कारण कार्याना उर्जावाना उर्जावाना कारण कार्याना कार्याना अपनेताना

Uttar Ujala

तकनीक मददगार है पर घातक भीः जस्टिस नागेश्वर



एकएआई लॉ कालेज में जीन्ट्स एत नारेश्वर राव ने संब्धनार का शुभारंभ किया।

देहरादून हमारे संवाददाता

मुप्रीम कोर्ट के न्यावाधीश न्यावमृति एल नारोक्षवर राज ने कहा है कि तकनीकि विकास से हर क्षेत्र में मुविधाएं नहीं हैं. लेकिन यह धातक भी हैं। मोबाइल फोन रिकॉर्ड, कंप्यूटर आदि चीजें अदालतों में पूछताछ और सब्त के तौर पर इस्तेमाल होती हैं। लेकिन वडी मोबाइल इस्ताना हाता है। टाकन वहा नामारा फोन और कंप्यूटर आज के समय में आपको जानकारी चुराने का सबसे बड़ा जरिया बन चुके हैं। यह शॉनवार को आईसीएफएआई लॉ कॉलेज में राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर संबोधित कर

आईसीएफएआई लॉ कॉलेज में तकनीको विकास और कानून के बदलते आयाम पर राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंच शनिवार को हुआ। सम्मेलन में खात्राओं को नरो की लत के खिलाफ जागरूक किया

देहराडून। परि फाउडेशन ने शनिवार को राजपुर रोड रियत पूर्व माध्यमिक बालिका में नर्श के खिलाफ जागलकता अभियान बलाया। साथ ही छात्राओं की स्कूल में नशे के खिलाफ अमस्यकता आम्बान वताता नाथ हो छानाओं का स्वास्थ्य और बारिक धर्म से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारिया दी और छाउडेरान की संस्थापक छा, सीना कौशत शुक्त ने कहा कि किशोरकन्या में मन सबसे ज्यादा धर्मल होता है। इसी अवस्था में बीदिक समराओं को एकांग्र कर इसका इस्तेमात सकारान्यक कार्यों में करना सीख लेना चाहिए। उन्होंने छात्रओं को नशे से दूर सने पर और दिया। कहा कि नशा मानव शरीर के लिए सबसे ज्वादा धातक होता है।

देशसर के 65 से ज्यादा लॉ विवि और सीखना होगा। न्यायपालिका की कॉलेज के छात्र हिस्सा ले रहे हैं। पेपरलेस कोर्ट बनाना, ई-फाइलिंग की सम्मेलन में शामिल शिक्षक और छात्रों ने देश की कानून व्यवस्था और केस

जानकारी दिए नजर रखन गलत है। आईसीएफएआई बिवि दून के कुलपति करनन को जानन ही कानून के सात्रों के या. पथन के अप्रकाल, या. मुक्क विनय, कानून को जानना ही कानून के छात्रों के

सुविधा प्रौद्योगिको के सकारत्यक गहलू है (कार्यक्रम में विजिष्ट अतिथि बीएचयू स्टडी के आधार पर शोध पत्र पेश किए। के प्रोफेसर आरके मुरली, प्रोफेसर प्रीति न्यावमृति एल नागेश्वर राज ने कडा सक्सेना, प्रोफेसर राजेश बहुनुणा, डा. कि व्यक्तिशवत गोपनीवता पर बिना योगेश पी सिंह, हा. ए शामिल हुए। लिए पर्याप्त नहीं है। इतन में मुखार के इत. वुगल किशोर, मोनिका खारोला, लिए प्रौद्योगिकी का सही उपयोग भी इत. सामर के जायसवाल नीजृद रहे।

Hindustan

अस् यंत्रान न में पत्रकार देखा ।। अन्तर १६ अध्युष्ण १५ वर्ग । १६० भा दनता हुउ । पद्र अ रे कर्मक्र को मार्च्य में एक अपनिस् वृत्तर के दोरत व्यवस्थानिक गर्थ के सुका को नकेंद्रर दी। तथा ही कहन अपन नगाम ने संस्को निर्म करने क्षानिक अपना अपना स्थापन एकं समय एवं के वे प्रचा कि वर्ष दर्शिया प्रदर्श किए । विकास ने

हें लीमें हे तथ इस मनते। अवस क्लंबल में स्थियन कर्णवाल पर पलटवर किया हो तेजर देवक में की। 🔠 ा पीवम है होने पर में। बहा वह जेल जारेग।





शम्पन्न में स्मृति विन्ह प्रदान करते हुए अतिथि।

गतिशील न्याय प्रणाली पर प्रभाव डाल रही है प्रौद्योगिकी: नागे

सब्दोर्ग देशम और करना सी है।

तबदरक्षा। अनुनेत्रकार प्रोत्तेनिक इन्हें परिवेत यह जानकों का तमाने प्रकार प्रोतीति तदक अंक्षिए के निद्धां पर्न मेन्द्र तन विश्वविद्याल केन्द्रपुर इस- जनते पर व्यक्त क्राय सन है जिए अवनते मेरिय जाता. ही प्रेमी में विद्या पनित दूर उन वे ब्रोमिय है स्वय है और मेबदूर पोन में दूरते हुए। इस आसर मा प्रे से. पद्मती ही असिन प्रशा हे बदलों अपन किया न जन्मी कहा कि अन्ते को उपयोग पा भी व्यक्तियों है। पान के अन्यान कुल्यी। दोने पानीय होता कर्यका तक राष्ट्रीय सम्पन्त को यह समझने पेत्रवे तेलें चाहेर पोरलीच्या की सुखा के लिए अईतीलकाई निर्णायन्य और विमालयन व्योगाय

अर्थन केंद्र गर राम्नेस कि क्रीवर्गिकों केरे बदाला में प्रमुख विकार है इसील करना देवतार प्रमुख वर्का में अध्यान और सावण सराज का आधीरन करना वे केंद्र में जनके बार और प्रदर्शन की की जीनना करना के प्रवर्शन करना के बहु किया है इस है कि मा सावार् इंसे तरनेरी महिने को दक्षत ने सूचा करते हैं। जिए स्थाप औं है जा ने और की लिए पूजा विशेष सामान के सबकार प्रतिका है दुए उसने हैं कि किया नावसहिता पेक्सिस कोर्ट सुबह है किए प्रोवीनिकों का सावक सैनिक वार्तन से । लाने पायान केंद्रित का ही। सबसेन और ताकरीओ विकास निदेशक, वी सारत केंद्र हा। अन्य प्राप्त प्राप्त करने के प्राप्त करने के स्वाप्त के नदद विभावत और अधिक राज महिल्ला विश्वविद्यालय के सार्व रामीयत गरम वं अदालते वे अब ई-काईला के लिए महत्वलूने हैं। वेल्ट की स्थीय प्रधान ने प्रथमित केले पुरेशहर हुन की जा ही और एवं की-नेट इस अवस्थ पर समेला है उनहाबाद विधानियाला

क बद्धारन में करनेत है हो। है एनरिसीस का मैं पूर्वी कैसरी डोम में है जीम मैसन करने सम्बद्धार सद्देश दिए विश्वविद्याल दिया। समस्य संस्थिति स्थान, क्रिया जात है और एवंचू काणनी स्थितत है। मुक्तन स्थान स्थान स्थान क्रियो समाप्त निर्माण स्थान वसे हु प्रदर्शन से व. प्रीतिक लोक कहनी और अन्य समानित अधिर्ध्य के जनकी वर्ष आपूर्व सेवान्स में करना देखदूर के पूछ अधिक साम्पूरी पत निवंद के लिए परिस्थिति के सब में स्कूल पति लीगत सरिम राजपूत और पिये प्रवृत्दि के सामान नांच्या का मात है करोब अनुसार साथ है सब मैठारी सटहीय, देवीएए हैं होंग अईसेक्टर में प्रविद्यालय हिम्प्यीवालयों है अन नवान्य के नवाँकर कर जाते हैं। विश्वविद्याल सहस्त्र में श्री के उन एक जिन है। कोंडर की विद्याल कर

कि को कु अब है जीती है। उन्होंने वह कि एक उस्प, बीजी सक्ष्मेण प्रवेतार हैं। के सम्बाद र महीत है मुख्य अस्त्र अध्योगिय ने पा क्रवा दर्पण गर्मिकी विकास है वाहिसी। भेजहरू पान स्थिति और राजेश बहुत्या ज्यानवार्य में अतिथे उच्च नामान्य में तिया

पुर नाम्बर का ने सम्मेल हैं। जात के लिए इन मेरिन मा ता के लगा ने प्रे अरके नहीं। स्वीमाण अविवास नामक विश्वविद्यालय

व्यवस्था १५ औत एवंग स्तुन के क्षण के क्षेत्र में अभिनुत्तों के कावृत्य में क्षेत्रित देशतरून नेतनत में नासीत नामनी इत्राधना

इस अवस्य पा असीगर

Shah Times



टेक्नोलॉजी के मिसयूज से पर्यावरण को खतरा : वर्मा

नेशनल सेमिनार में बोले इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज

DEHRADUN (14 April): संडे को इक्फाई यूनिवर्सिटी में तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम पर हुए दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का समापन हो गया है. समापन सत्र में इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज सिद्धार्थ वर्मा ने शिरकत की.

सही यूज हो टेक्नोलॉजी का

जज सिद्धार्थ वर्मा ने कहा कि हमारे देश में कानूनों को पर्यावरणीय चुनौतियों और बदलती टेक्नोलॉजी को ध्यान में रखते हुए विकसित करना है. टेक्नोलॉजी के मिस यूज ने नागरिकों और पर्यावरण के लिए चुनौतियां पैदा

की हैं और इसलिए न्यायपालिका को हमारे आसपास बदलती टेक्नोलॉजी के साथ बदलना है. एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण कानून के छात्रों के लिए बहुत जरूरी है और उन्हें टेक्नोलॉजी का गुलाम नहीं बनना चाहिए. इस दौरान पेपर प्रेजेंटर का अवार्ड पेट्रोलियम यूनिवर्सिटी कृष्णा गोयल और गर्विता अग्रवाल, बेस्ट पोस्टर का पुरस्कार इक्फाई यूनिवर्सिटी की गायत्री थापा को दिया गया. इस सत्र के गेस्ट डॉ.अनिल जोशी ने कहा कि भारत के गांवों से होकर गुजरने वाली और बहने वाली हर नदी एक पवित्र नदी की तरह है और इसलिए इसे संरक्षित किया जाना चाहिए. जिस तरह से हम जीडीपी की गणना करते हैं, उसी तरह से गणना सकल पर्यावरण उत्पाद की आवश्यकता है.

प्रौद्योगिकी न्याय प्रणाली को कर रही प्रभावित

जागरण संवाददाता, विकासनगर : इक्फाई विवि सेलाकुई में तकनीकी विकास व कानून के बदलते आयाम विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू हुई। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए छात्र-छात्राओं को कानून के टिप्स दिए। न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने कहा कि चाहे जांच के तरीकों में तकनीकी विकास हो या रिकॉर्ड रखने के काम के क्षेत्र में, प्रौद्योगिकी हमारी गतिशील न्याय प्रणाली पर व्यापक प्रभाव डाल रही है।

उन्होंने कहा कि छात्रों को यह समझने में रुचि लेनी चाहिए कि प्रौद्योगिकी कैसे अदालत में उनके काम और प्रदर्शन की दक्षता में सुधार करती है। न्यायपालिका पेपरलेस कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है और नागरिकों के लिए कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग जैसी सुविधाएं शुरू की जा रही हैं। जांच के लिए ब्रेन मैपिंग और नार्को एनालिसिस का भी उपयोग किया जाता है और परिणाम हमेशा कहानी और निर्णय के लिए परिस्थिति के अनुसार साक्ष्य के साथ मिलाए जाते हैं। एक तरफ, मोबाइल फोन रिकॉर्ड और अभियुक्तों के कंप्यूटर में जानकारी का उपयोग पूछताछ के लिए अदालतों में किया जाता है और मोबाइल फोन के दूसरे उपयोग पर भी व्यक्तियों की गोपनीयता की सुरक्षा के

राष्ट्रीय सम्मेलन

- इक्फाई विवि में तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम पर सम्मेलन
- सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश एल नागेश्वर राव ने सम्मेलन का किया उद्घाटन

लिए प्रमुख चिंताएं हैं। इसलिए कानून को जानना, कानून के छात्रों के लिए पर्याप्त नहीं है, ज्ञान में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग और तकनीकी विकास का ज्ञान ही समाज की मदद के लिए महत्वपूर्ण है। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. आरके मुरली फैकल्टी ऑफ लॉ बीएचय वाराणसी ने छात्र-छात्राओं को कानून की जानकारी दी। कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति इलाहाबाद सिद्धार्थ वर्मा मौजूद रहेंगे। कार्यशाला में लखनऊ से प्रो. प्रीति सक्सेना, प्रो. डॉ. राजेश बहुगुणा प्रधानाचार्य लॉ कॉलेज देहरादून, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी कटक ओडिशा के डॉ. योगेश पी सिंह, प्रो. पवन के अग्रवाल कुलपति, प्रो-वाइस चांसलर प्रो. मुड्डू विनय, प्रो. युगल किशोर, मोनिका खारोला, डॉ. सागर के जायसवाल. अभिषेक राज, रूद्रेश श्रीवास्तव, अंकित राज, सौरभ शेखर, करन उपाध्याय. मुस्कान अग्रवाल, आयुषी श्रीवास्तव, सौरभ राजपुत आदि मौजूद रहे।

सम्मेलन में कानून के बदलते आयाम पर चर्चा

मास्कर समाचार सेवा

देहरादून। आईसीएफएआई विश्वविद्यालय के तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय 'तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम' विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में कानून के क्षेत्र में हो रहे तकनीकी प्रगति के बारे में चर्चा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल. नागेश्वर राव ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन को संबोधित करते हुए, उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि एल नागेश्वर राव ने बताया कि प्रौद्योगिकी हमारे गतिशील न्याय प्रणाली पर व्यापक प्रभाव डाल

 न्यायाधीश एल. नागेश्वर राव ने किया उद्घाटन

रही है। छात्रों को यह समझने में रुचि लेनी चाहिए कि प्रौद्योगिकी कैसे अदालत में उनके काम और प्रदर्शन की दक्षता में सुधार करती है। न्यायपालिका पेपरलेस कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है और नागरिकों के लिए कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग जैसी सुविधाएं शुरू की जा रही हैं। जांच के लिए ब्रेन मैपिंग और नाकों एनालिसिस का भी उपयोग किया जाता है और परिणाम हमेशा कहानी और निर्णय के लिए परिस्थित के अनुसार साक्ष्य के साथ मिलाये जाते हैं।

Dainik Bhaskar

'न्याय के क्षेत्र में तकनीकी का अहम योगदान'

देहरादून। तकनीकी विकास और कानून के बदलते आयाम विषय पर इक्फाई विवि में दो दिवसीय सम्मेलन शनिवार को शुरू हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एल. नागेश्वर ने किया।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में न्याय के क्षेत्र में तकनीकी का अहम योगदान है। मुकदमों की विवेचना हो या न्यायालयों में रिकॉर्ड रखने की बात सभी जगह प्रौद्योगिकी अपना रोल अदा कर रही है। मौजूदा समय में पेपरलेस कोर्ट बनाने पर जोर दिया जा रहा है। इस समय कुछ अदालतों में ई-फाइलिंग का काम भी शुरू हो गया है। कार्यक्रम में 65 से अधिक विवि के छात्र-छात्राओं और 330 शोधकर्ताओं ने भाग लिया। शनिवार के कार्यक्रम का समापन उच्च न्यायालय इलाहाबाद के न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा ने किया।

इस अवसर पर स्कूल फाँर लीगल स्टडीज लखनऊ की प्रोफेसर प्रीति सक्सेना, प्रोफेसर डाॅ. राजेश बहुगुणा प्रधानाचार्य लाॅ कॉलेज देहरादून, नेशनल लाॅ विवि कटक ओडिशा के डाॅ. योगेश पी. सिंह आदि उपस्थित रहे। ब्यूरो

Amar Ujala

प्रौद्योगिकी का गतिशील न्याय प्रणाली पर व्यापक प्रभावः राव



क्रमेशन में विधार आक्स करते विशेषक।

🔳 सहारा न्यूज ब्यूरो

इक्फाई विश्वविद्यालय में 'तकनीको विकास और कामून के बदलते आवार विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू हो गया। सम्मेलन ने विजेवलें ने पुरास क्या से त्याय प्रणाली ने एकनीकी विकास पर वर्ज की गई। साथ शे तकरीको विकास को समान के लिए

महत्वपूर्ण बताय गया। सम्मेलन में 62 से अधिक विश्वविद्यालयों के 330 शोधकर्त व साम थाए शे रहे हैं।

शनिका को इक्सर्थ परिसर में आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन सर्वोच्य नायालय के न्यायधील एत नगेशवर राव ने किया। उदावटन सत्र में बतीर मुख्य अधियि में राव ने प्रीदोगिकी देश के हाले गाँ। में भे लेकर विकार रखने तक हम जगह प्रौद्योगिको का उपयोग हो रहा

इसके तहत नर्तारकों के लिए कई विकास व कानन के बदलते उपमेंग किया जात है। विकास को बताया समाज जायसवार, अधिकेंक परिष्णम स्थाप के लिए महत्वपूर्ण राज आदि ने विचार और निर्णय के लिए -

unit Et.

और अधियुक्तें के कंप्यूटर में बानकारी का तपदोग पुरुषाठ के लिए अवलाते में हो रहा है। उन्होंने कहा कि कानून को जनना है छात्रों के जिस पर्याप्त नहीं है।

सम्मेलन में बतीर विशिष्ट अतिथि बीएसपू के प्रे. अगरके मुरलो, स्कूल फीर

लीगल स्टडींग बीबीएम् केंद्रीय विश्वविद्यालय (लाक्टर्ड) से प्रे. प्रीति सक्तेत, लॉ कालेज देहरादून के प्राचार्य हा है। उन्होंने कहा कि न्याप्यालिका पेपालेस राजेश बहुगुण, नेशकल ला पृनिवसिटी कोर्ट बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। कटक (अदिशा) के हा स्रोध्य पी. सिह,

इक्सई विदेश के हक्फाई विवि में तकनीकी कुलकी प्रे. (इ.) प्वन विकास व कानून के बदलते के अववाद प्रे-वाइस अध्यात्र में अब इ पश्चिम जैसे सुविष्यः युक्त को वा सी है। जन के निज् के पैरिंग और नवा वा सामित के न्यायाधीश ने तकनीकी इ. अब के - विधार व्यक्त किये।

परिस्थित के अनुसार पाइय के साथ मिलाये सम्मेलन के आयोजन में रुद्रेश श्रीवास्तव, अधिक राज, सीरण शेखा, करन उन्होंने कहा कि पोबाइल पोन निकार्य जगायाय, मुनकान आवाल जगाये सिना, र ऑपमुकों के कंप्यूटर में जनकारी का जनवी पाण्डे, आयुक्षे घोषानका, मीरभ राजपूर समेश अनेक रात्में ने समयोग दिया। 14 अप्रैल को समापन समारेल में उल्ल न्यायालय इलाहाबाद के न्यायायीत सिद्धार्थ वर्षा बतीर मुख्य अतिथि मोजूद रहेंगे।

Rashtriya Sahara

न्यायपालिका को पेपरलेस बनाना प्राथमिकता

के भरी) आई मीए फए आई विश्वविद्यालय आग तक नीकी किसार और कानून के बदली आधाम किया या आयोजित ही दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ अनीच न्यायासय के किया। प्रजीने जहां कि यहें का जांच के तरीकों में तक नीकी विकास हो सा विकार राजने के काम के क्षेत्र में प्रीद्योगिको हमारे गतिशील न्य प्याली पर ब्यापक प्रधाय द्वाल रही है। उन्होंने कहा कि शारों को पर समझने में श्रीक लेगी स्वतिए कि प्रीयोगिको कैसे अदलत में अपने करती है। ज्यावपालिका पेपालेस है और नागरिकों के लिए कई अञ्चलती में लग्न ई-फाइलिंग जैसे सुविधाएं जुन की जा खी है। जीय के लिए बेन मैपिंग और नाकों इनलिसिस का भी उपयोग किया और निर्णय के लिए परिश्वित के अनुसार सास्य के साथ मिलाये जाते. हैं। एक तरफ, मोबाइल फोन रिकॉर्स

- कई अदालतों में अब ई-फाइलिंग की सुविधा जल्द शुरु होणी
- प्रोह्मेंजिकी के उपयोग से न्यायणितक की दक्षता में आएशा सुसार

सम्मेलन में कई विशेषज्ञों ने

मार्गका के रूप में प्रो. आए के मुराली, फैकसटी लोग लॉ, कई विशेषज्ञा न ब एम पू नाराण्या अन्य अर्थाव्या के कर वे स्कूल करें जीतक स्टेशन, बोबीएप के कर जितक स्टेशन, बोबीएप के क्रिक विश्वविकासन, स्वकार में के मीति सक्तेन, जे, डॉ एवंस बहुएमा, स्वानाव्य ना क्रीकर देशाएँ

निमान में प्रीवर्धिये, कटक, ओडिशा के डॉ चेरेन में सिंह, मेरियन इए। सम्मेलन में आसीए मुस्लिम निम्नीवरात्म्य, शतकाबाद विश्वविद्यात्म्य, लाइनक विश्वविद्यात्म्य, गर्दाच विश्वविद्यात्म्य, स्वाचा विश्वविद्यात्म्य, वृष्टीहेया ना कलोक देशपट्न, लोगक, एसिटी, प्रशाहित के दह से अधिक विश्वविद्यात्म्य वे एसी, श्रीयक्रीओं और विकानी महित लगभग ३३० प्रतिभागियों ने भाग लिया।

बानकारी का उपयोग पूछताछ के इसलिए कानून को जनना, कानून महत्वपूर्ण है।

लिए अदालाों में किया जात है और के वाओं के लिए पर्याप्त नहीं है, जान मोबाशल फोन के दूसरे उपयोग पर में सुधार के लिए प्रीरोशिकों का भी व्यक्तिमाँ को गोपनीयता की उपयोग और तकनीकी विकास का अधियुक्त के कंप्यूटर में भूरक्षा के लिए प्रमुख चिंताएं हैं। तान ही समाज की मदद के लिए



दूर में अयोक्ति संगीनर का शुभरंभ करते अतिविक्ता। फायः -पानव केसरी